हक हादी रूहन सों

हक हादी रूहन सों, जो किया कौल अव्वल।
ए खुलासा मेयराज का, जो रूहों हुई रदबदल।।

कौल अलस्तो-बे-रब का, किया रूहों सों जब।
हक इलम ले देखिए, सोई साइत है अब।।

तब वले कह्या अरवाहों ने, अर्स से उतरते।
किया जवाब हक ने, रूहों याद किया चाहिए ए।।

उतर आए नासूत में, भूल गए अर्स की।
इत पैदा फना के बीच में, जाने हम हमेसगी।।

कहे महंमद सुनो मोमिनों, ए उमी मेरे यार।
छोड़ दुनी ल्यो अर्स को, जो अपना वतन नूर पार।।

हम बंदे रूहें इन दरगाह, कह्या अर्स दिल मोमिन।
यारों बुलावें महंमद, करो सिजदा हजूर अर्स तन।।